परामर्श प्रमुख

श्री कैलाशचंदजी जैन, झाँसी
श्री जिनेन्द्रकुमारजी जैन, अहमदाबाद

प्रधान संपादक
सिंघई राजेन्द्र जैन, 9424013136

सह संपादिका
श्रीमती अनुपमा–रजनीश जैन, 9009066884
श्रीमती साधना–सुनील जैन, 8602696165

कोषाध्यक्ष
सुधेशकुमार जैन, 9827254111

प्रबंध संपादक
राजेन्द्रकुमार जैन, सायकलवाले 9425353972
खुशालचंद जैन, 9302123879
कोमलचंद जैन, 9329524227

संयोजक एवं प्रकाशक
बाहुबली जैन, 9827247847

समाज के श्रेष्ठीजनों से पुन: सादर अनुरोध है कि समाज की एकमात्र सामाजिक पत्रिका गोलालारीय दर्शन के निरंतर प्रकाशन के लिए आप शिरोमणि संरक्षक, परम संरक्षक, संरक्षक, विशेष सहयोगी बनकर पत्रिका को आर्थिक संबल प्रदान करें।

शिरोमणि संरक्षक, परम संरक्षक अपना संक्षिप्त परिचय सपत्नीक फोटो सहित एवं संरक्षक तथा विशेष सहयोगी सदस्य अपना संक्षिप्त परिचय फोटो सहित भेजे ताकि प्रकाशन किया जा सके।

विशेष सहयोगी
अनिल कुमार ज्ञानचंद जैन, गंजबासौदा

सहयोगी
संजय गुलाबचंद जैन, इन्दौर
एड. खुशालचंद जैन, विदिशा
नेमीचंद जैन, गंजबासौदा 'खजुराहोवाले'

सदस्यता शुल्क

शिरोमणि संरक्षक (अ.जा.)	21000/–
परम संरक्षक (अ.जा.)	11000/–
संरक्षक (अ.जा.)	5100/–
विशेष सहयोगी (अ.जा.)	2100/–
सहयोगी सदस्य	1100/–
सहयोग राशि	500/–

आप 'गोलालारीय दर्शन' के बैंक खाते में सहयोग राशि स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के खाता क्रं. 63048875855
IFSC Code: SBIN0030134
में चेक द्वारा ही जमा कर स्लीप की फोटोकॉपी व अपना नवीन फोटो मय जानकारी के हीरालाल एण्ड संस, 16 महारानी रोड व कार्यालय पते पर अवश्य भेजें ताकि आपको रसीद भेज कर आपका विवरण प्रकाशित किया जा सके।
नोट – 8 मार्च 2014 से अन्य शहरों से जमा की जाने वाली राशी पर बैंक शुल्क न्यूनतम 50 रु. कर दिया है।

अत: बायोडाटा शुल्क मल्टीसिटी चेक के द्वारा ही पत्रिका के पते पर भेजे।

विज्ञापन दर (कलर)

अंतिम पेज	15000/–
फुल पेज (अंदर)	11000/–
1/2 पेज	5000/–
1/4 पेज	3000/–
मांगलिक बधाई फोटो सहित	2000/–
शोक संदेश फोटो सहित	1000/–
बॉयोडाटा फोटो सहित	300/–

बायोडाटा, समाचार व अन्य कोई जानकारी पत्रिका में प्रकाशित करने हेतु गोलालारीय दर्शन 64, न्यू देवास रोड, इन्दौर अथवा श्री राजेन्द्रकुमार जैन हीरालाल एण्ड संस, 16 महारानी रोड, इन्दौर पर भेंजे।

विनयांजलि –

अपने प्रखर चिंतन के बल पर शताब्दियों तक जीवंत रहेंगे – क्रांतिकारी मुनिश्री तरुणसागरजी महाराज

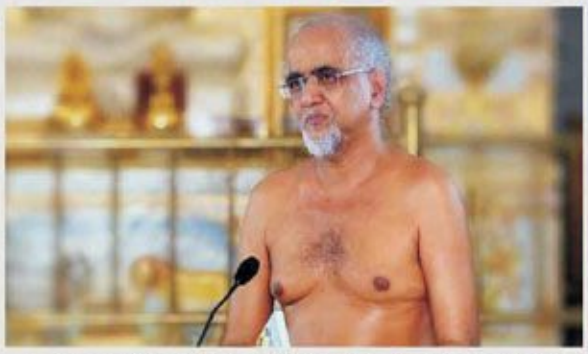

भारत ही नहीं, अपितु सारे विश्व को जैनों को ही नहीं, अपितु जन जन को कड़वे प्रवचनों के माध्यम से एक नई सोच, नया चिंतन सौंपने वाले क्रांतिकारी संत मुनिश्री तरुणसागर जी महाराज का दिल्ली में 1 सितम्बर 2018 को प्रातः 3.15 बजे समता पूर्वक समाधिमरण हो गया। पिछले अनेके दिनों से वे अस्वस्थ चल रहे थे। जैसे ही मुनिश्री तरुणसागरजी महाराज के देवलोकगमन की सूचना लोगों को मिली लाखों की संख्या में जैन और जैनेत्तर श्रद्धालुओं का सैलाब उनके अंतिम दर्शनों के लिए दिल्ली में उमड़ पड़ा। तरुणसागरम धाम में उनको अंतिम विदाई दी गई। कड़वे प्रवचन के लिए सुविख्यात क्रांतिकारी संत तरुणसागरजी महाराज की प्रखर वाणी अब मौन हो गई है। संत की साधना मृत्यु को महोत्सव बना देती है और मुनिश्री के समाधि मरण ने इसे चरितार्थ किया है। एक गुरु तारा हमें छोड़कर चला गया। उनकी अंतिम महायात्रा में शामिल श्रद्धालुओं तो रो ही रहे थे लेकिन जब धरती के एक सूर्य का अवसान हो रहा था तो गगन में स्थित सूर्य भी छिप गया और खूब रोया। दिनभर बारिश होती रही। क्रांतिकारी संत मुनिश्री तरुणसागरजी महाराज का विराट, बेमिसाल और अदभुत व्यक्तित्व था। एक महान तपस्वी की यात्रा का समापन हुआ है। एक ऐसा तपस्वी जिसने अपने कड़वे प्रवचनों से आम आदमी के जीवन में मिठास घोलने का अथक प्रयास किया है।

काल के कपाल पर एक अमिट इतिहास की रचना – मुनिश्री का नाम लिम्का बुक रिकार्ड ही नहीं बल्कि गिनीज़ वर्ल्ड रिकार्ड में दर्ज है। दिल्ली के लाल किले से मांस निर्यात के विरोध में अहिंसा महाकुंभ का आयोजन कर उन्होंने जो शंखनाद किया, वह आज भी लोगों के दिलो में है। वह अपने बेबाक विचारों के लिए जाने जाते थे। आपके आयोजनों का प्रसारण 100 से अधिक देशों में होता था। देश–विदेश में मुनिश्री के करोड़ों अनुयायी थे। इतनी कम आयु में कालजयी विराट व्यक्तित्व का जाना स्तब्धकारी है। मुनिश्री भारतीय संस्कृति के अनमोल रत्न थे, उनके जाने से भारतीय संस्कृति की एक बहुत बड़ी क्षति हुई है।

तरुण सागर ने 'कड़वे प्रवचन' के नाम से एक बुक सीरीज प्रारंभ की जिसके लिए मुनिश्री काफी चर्चित रहे। मुनिश्री केवल जैन समुदाय के संत नहीं थे, उनके लाखों की संख्या में जैनेतर समुदाय के भक्त भी थे, उनके इतनी जल्दी चले जाने से उनके करोड़ों अनुयायी स्तब्ध हैं। उन्होंने दिगम्बरत्व को जन–जन तक पहुंचाया।

मुनिश्री के जाने से संत समुदाय में जो रिक्तता हो गयी है, उसकी पूर्ति संभव नहीं है। उनके क्रांतिकारी प्रवचनों को सुनकर लाखों लोग शाकाहारी बने, लाखों लोगों ने शराब, व्यसनों को त्याग कर जीवन की नई दिशा प्राप्त की। जानी पहचानी तेज आवाज में प्रवचन करने वाले राष्ट्रसंत की वाणी अब हमेशा के लिए खामोश हो गई। ऐसे संत शताब्दियों, सहस्रों वर्षों में होते है। मुनिश्री द्वारा भारतीय संस्कृति को दिया गया अवदान हमेशा अविस्मरणीय रहेगा। हम हमेशा उनके आदर्शों, करुणा और समाज के प्रति उनके योगदान को लेकर याद करेंगे। देह से भले ही वे हमारे बीच न रहे हों परंतु उनके महान कार्य हमेशा उन्हें जीवंत बनाये रखेंगे। उन्होंने पूरी चेतना के साथ समाधिमरण किया गया, यह भी एक उपलब्धि है। उन्होंने जीवन के अंतिम पलों में अन्य जल, समस्त परिग्रह का त्याग कर दिया। सभी के प्रति उत्तम क्षमा का भाव रखा। संत समूह के मध्य संलेखना समाधि प्राप्त की।

उनका यह कथन चर्चित रहा कि – 'मैं महावीर को मंदिरों से मुक्त करना चाहता हूँ, यही कारण है कि मैंने आजकल मंदिरों में प्रवचन करना बंद कर दिया है। मैं तो शहर के व्यस्ततम चौराहों पर प्रवचन करता हूँ क्योंकि मैं महावीर को चौराहे पर खड़ा देखना चाहता हूँ'। मुनिश्री अपने कड़वे प्रवचन में हमेशा सभी को झकझोरने वाली वाणी बोलते थे। उनके वचनों की कुछ बाते इस प्रकार है – ''जब भी जिंदगी में संकट आता है, तो सहनशक्ति पैदा करो। जो सहता है वही रहता है। जीवन परिवर्तन के लिए सुनने की आदत डालो। सुनना भी एक साधना है। चिंतन बदलों तो सब कुछ बदल जायेगा। इससे रंग नहीं, तो कम से कम जीने का ढंग तो बदल ही सकता है।''

''परिवार में किसी सदस्य को तुम नहीं बदल सकते। तुम अपने आपको बदल सकते हो, यह तुम्हारा जन्मसिद्ध अधिकार है। पूरी दुनिया को चमड़े से ढंकना तुम्हारे बस की बात नहीं है। अपने पैरों में जूते पहन लो और निकल पड़ो फिर पूरी दुनिया तुम्हारे लिये चमड़े से ढंकी जैसी ही होगी। मंदिर और सत्संग से घर आओ, तो पत्नी को लगना चाहिए कि बदले बदले मेरे सरकार नजर आते है।''

''भले ही लड़ लेना–झगड़ लेना, पिट जाना–पीट देना, मगर बोलचाल बंद मत करना क्योंकि बोलचाल के बंद होते ही सुलह के सारे दरवाजे बंद हो जाते हैं।''

मुनिश्री कहते थे – सुखी जीवन का राज सिर्फ इतना सा है कि हम अभाव में नहीं सद्भाव में जीये, अहंकार शून्य, सच्चाई पूर्ण जीवनयापन करें। संतोष जीवन है और तृष्णा मृत्यु है।

बाबा रामदेव भी मुनिश्री के पास अनेकोबार आते रहे हैं। अभी जब उनका स्वास्थ्य खराब चल रहा था तब भी वे मुनिश्री के स्वास्थ्य को जानने पहुँचे। उन्होंने बताया कि मुनिश्री से मैंने अनुरोध किया था कि थोड़ा सा व्रतों में शिथिलता दें तो स्वास्थ सुधार हो सकता है लेकिन उन्होंने कहा था कि शरीर छोड़ सकता हूँ लेकिन व्रतों में शिथिलता नहीं कर सकता। ऐसी मुनिश्री की दृढ़ निष्ठा थी।

मुनिश्री तरुणसागरजी महाराज का संक्षिप्त परिचय–

मुनिश्री का जन्म – 26 जून, 1967। जन्म नाम – पवन कुमार जैन। जन्म स्थान – दमोह (म.प्र.) जिले के गुहंची गांव। माता का नाम – श्रीमती शांतिबाई जैन। पिता का नाम – श्री प्रतापचंद्र जैन। क्षुल्लक दीक्षा – 18 जनवरी 1982 को अकलतरा (म.प्र.) में। मुनि दीक्षा – 20 जुलाई 1988 को बागीदौरा (राज.)। मुनि दीक्षा गुरु परम पूज्य आचार्य श्री 108 पुष्पदंत सागरजी महाराज है।

विशेष – 13 वर्ष की उम्र में सन्यास, 20 वर्ष में दिगम्बर मुनि दीक्षा। 33 वर्ष में लाल किले से राष्ट्र को संबोधन। 35 वर्ष में 'राष्ट्रसंत' की पदवी से नवाजे गये। 37 वर्ष में 'गुरु मंत्र दीक्षा' देने की नई परम्परा की शुरुआत।

साहित्य सृजन : 3 दर्जन से अधिक पुस्तकें उपलब्ध और उनकी अब तक 15 लाख से अधिक प्रतियां बिक चुकी है। उनकी प्रमुख कृतियां – दुख से मुक्ति कैसे मिले, क्रोध को कैसे जीतें, प्रेस वार्ताएं, चपलमन, मन को कैसे जीएं, जीवन क्रांति का सूत्र– मृत्यु बोध, मैं सीखने नहीं जगाने आया हूँ, मैं तुम्हें टेर रहा, अहिंसा महाकुंभ आदि प्रमुख है।

कीर्तिमान – आचार्य कुन्दकुन्द के पश्चात गत दो हजार वर्षों के इतिहास में मात्र 13 वर्ष की उम्र में जैन सन्यास धारण करने वाले प्रथम योगी। राष्ट्र के प्रथम मुनि जिन्होंने लाल किले (दिल्ली) से संबोधित किया। महज 51 वर्ष की अल्पायु में वे चले गए।

ऐसे मुनिश्री तरुणसागरजी को समाधिपूर्वक चिर–निंद्रा में विलीन होने पर उनके चरणों में कोटिश: नमन श्रद्धा सुमन !!!

आलेख – डॉ. सुनील जैन 'संचय'
ललितपुर

शेष पृष्ठ 1 का..... इस प्रसंग पर विज्ञापन के रुप में जो खर्च आयेगा, वह सच में आपके मांगलिक कार्य पर होने वाले खर्च का छोटा सा अंश भर है पर जो यादगार क्षण आप समाज के बीच में रखेंगे, वह अमर व अमूल्य होगा जिसका आनंद आप ताजीवन ले सकेंगे।

विवाह विशेषांक के सफल प्रकाशन में कुछ साथियों का अमूल्य योगदान रहा है जिसे इस अवसर पर याद रखना अति आवश्यक है। जबलपुर के श्री अरविंदजी बाकलवाले, विदिशा से श्री अरविंदजी, गंजबासौदा से श्री शांतिकुमारजी का विशेष सहयोग रहा है जिन्होंने अपने व्यवसाय/नौकरी में से अतिरिक्त समय निकालकर बायोडाटा के संकलन का कार्य संपादित किया। झांसी से श्री राजेश जैन बीड़ीवाले, ललितपुर से श्री राकेश जैन व श्री मुन्नालालजी, छतरपुर से श्री अनिलजी, खनियाधानां से श्री विमलजी, भोपाल से श्री राजेशजी, नागपुर श्री प्रकाशचंदजी व पवा से श्री विशालजी इत्यादि ने अभिभावकों को मार्गदर्शन देकर बायोडाटा भेजने में सहयोग किया। परन्तु खेद है कि कुछ अभिभावक अंतिम दिनांक निकलने के 5–7 दिन पश्चात तक बायोडाटा भेजने की जानकारी लेते रहे। अभिभावक स्वयं विचार करे कि अपने बच्चों के विवाह प्रसंग के लिए हम कितने गंभीर है। हम क्यों अंतिम तिथि का इंतजार करते है क्यों हम चाहते है कि हमारे घर आकर पत्रिका प्रतिनिधि हमारे बच्चों का बायोडाटा फार्म भरकर प्रकाशन के लिए लेकर जावे, इतनी निर्भरता क्यों? हमें विचार करना पड़ेगा। ''गोलालारीय दर्शन'' पत्रिका से जुड़े सभी नगर प्रतिनिधि अपने समाज की प्रगति के लिए नि:शुल्क निस्वार्थ सेवाएं प्रदान कर रहे है हमें भी उन्हें आगे बढ़कर सहयोग देने की भावना विकसित करना चाहिए। जिससे कि वे सामाजिक कार्यों में संलग्न रहकर समाज की उत्तरोत्तर प्रगति में सहायक सिद्ध हो। – संपादक राजेन्द्र जैन 'बागो'